द्वितीयः पाठः

अन्योक्तिविलासः

सरल हिंदी अनुवादः हर लाइन हर शब्द का अलग अनुवाद

कक्षा – 10 हिंदी

(हिंदी वाली संस्कृत)

UP BOARD EXAM

नितरां नीचोऽस्मीति त्वं खेदं कूप ! कदापि मा कृथाः ।

अनुवाद -हे कुएँ ! " (मैं) अत्यधिक नीच (गहरा) हूँ " -तुम इस प्रकार कभी भी खेद मत करो ;

अत्यन्तसरसहृदयो परेषां गुणग्रहीताऽसि।।1 ।।

क्योंकि (तुम) अत्यन्त सरस - हृदय (जल से पूर्ण) हो (और) दूसरों के गुणों (रस्सियों) को ग्रहण करनेवाले हो ।

यतः नीर - क्षीर - विवेके हंसालस्यं त्वमेव तनुषे चेत् ।

- हे हंस ! यदि तुम ही नीर और क्षीर का विवेक करने में आलस्य करोगे ,

विश्वमिस्मन्नधुनान्यः कुलव्रतं पालयिष्यति कः।।2 ।।

तो इस संसार में ऐसा कौन है जो अपने कुलव्रत का पालन करेगा ?

कोकिल ! यापय दिवसान् तावद् विरसान् करीलविटपेषु ।

हे कोयल ! तब तक तुम अपने नीरस दिनों को करील के वृक्षों पर ही बिताओ ।

यावन्मिलदलिमाल: कोऽपि रसाल: समुल्लसति।।3 ।।

जब तक भौंरों से युक्त कोई आम्रवृक्ष विकसित न हो ,

*संपूर्ण अनुवाद - हे कोयल ! जब तक भौंरों से युक्त कोई आम्रवृक्ष विकसित न हो ,तब तक तुम अपने नीरस दिनों को करील के वृक्षों पर ही बिताओ । (अर्थात् जब तक अच्छे दिन आएँ , व्यक्ति को बुरे दिन किसी प्रकार व्यतीत कर लेने चाहिए) ।

ज्ञानात् मुक्तिः
* ||ज्ञानम् मनुष्यस्य तृतीय नेत्रम् ||*

रे रे चातक ! सावधानमनसा मित्र ! क्षणं श्रूयताम् ।

हे मित्र चातक ! सावधान मन से क्षण भर सुनो ।

अम्भोदा बहवो हि सन्ति गगने सर्वेऽपि नैतादृशा: ।।

आकाश में अनेक बादल रहते हैं , पर सभी ऐसे (उदार) नहीं होते ।

केचिद् वृष्टिभिरार्द्रयन्ति वसुधां गर्जन्ति केचिद् वृथा ।

कुछ तो वर्षा से पृथ्वी को गीला कर देते हैं , (पर) कुछ व्यर्थ ही गरजते हैं ।

यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतो मा ब्रूहि दीनं वच:।।4 ।।

जिस - जिस को देखते हो उस - उस के सामने दीन वचन मत बोलो । (अर्थात हर एक से माँगना उचित नहीं ; क्योंकि हर एक व्यक्ति दानी नहीं होता) ।

न वै ताडनात् तापनाद् वह्निमध्ये न वै विक्रयात्

क्लिश्यमानोऽहमस्मि ।

मैं (स्वर्ण) न तो पीटे जाने से , न अग्नि में तपाए जाने से और न

बेचे जाने से दु:खी होता हूँ ।

सुवर्णस्य मे मुख्यदु:खं तदेकं यतो मां जना गुञ्जया तोलयन्ति ।। 5

।।

मुझ सुवर्ण का एक ही दु:ख है कि लोग मुझको रत्ती (घुघुची) से

तोलते हैं , यही दु:ख है |

भौंरा कमल में बन्द हो गया , वह रातभर यही सोचता रहा कि -

रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातं , भास्वानुदेष्यति हसिष्यति पंकजालिः ।

रात्रि समाप्त होगी , प्रातःकाल होगा , सूर्य उदित होगा , कमल - समूह विकसित होगा ।

इत्थं विचिन्तयति कोशगते द्विरेफे , हा हन्त ! हन्त ! नलिनी गज उज्जहार।।6

" दुःख का विषय है कि कमल - कोश में बन्द भौंरे के इस प्रकार विचार - मग्न होने पर , किसी हाथी ने कमलिनी को उखाड़ लिया ।

(अर्थात् व्यक्ति सोचता कुछ है , जब कि ईश्वर कुछ और ही कर देता है)

JOIN TELEGRAM FOR PDF

VISIT WEBSITE FOR ALL PDF –

WWW.GYANSINDHUCLASSES.COM

THANKS FOR REACHING US

THANKS FOR WATCHING

PLEASE VISIT MY WEBSITE

PLEASE SHARE AND SUBSCRIBE